

الکتبر ۲۰۰۶ء

شعاع حسن

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ وَهُوَ السَّامِعُ الْعَلِيمُ



مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

October
2006

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लखनऊ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufuran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष—3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 4

माह अक्टूबर — 2006 लखनऊ
नूर—ए—हिदायत फाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नकवी साहिब

सम्पादक

सै. मुस्तफा हुसैन नकवी ‘असीफ’ जायसी

उप—सम्पादक

हैदर अली

कार्यकारिणी बोर्ड

प्रोफेसर सै० अली मुहम्मद नकवी, प्रोफेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक — 200 रु

मिलने का पता

कीमत — 20 रु

नूर—ए—हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ — 3 (उ.प्र.) भारत फोन न० 0522—2252230

सै. कल्बे जवाद नकवी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस
नूर-ए-हिदायत फाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफा हुसैन नकवी ‘असीफ जायसी’।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न०	मज़मून	लेखक	पेज न०
1-	रोज़ा और आपसी भाई चारा.....अल्लाह की बन्दगी और वफ़ादारी		
	इमादुल उलमा अल्लामा सै मुहम्मद रज़ी साहब क़िल्बा		3
2-	एक सबक़ इस्लाम से		
	सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद साहब क़िल्बा ताबा सराह		5
3-	इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद		
	हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान		7
4-	प्रोफ़ेसर अल्लामा सैय्यद अली मुहम्मद नक़वी की पुस्तकें और शोध-लेख		
	मु० र० आबिद		9
5-	प्रशस्ति-पत्र		
	मिनजानिब- मौलाना कल्बे जवाद फ़ैन्स एसोसिएशन		13
6-	मुख्य समाचार		
	इदारा		15

अक़्वाले इमाम हसन अलैहिस्सलाम

- ☐ तंगी में ख़ैरात करना ज़वाँमर्दी है।
- ☐ माल का जमा करना मलामत है।
- ☐ शरीफ़ों से लड़ना झगड़ना बेवकूफी है।
- ☐ गुस्से को पी जाना और नफ़्स पर क़ाबू रखना हिल्म है।
- ☐ नेक काम करना और बुरे कामों को छोड़ देना सरदारी है।

रोज़ा और आपसी भाईचारा

अल्लाह की बन्दगी और वफ़ादारी

इमादुल उलमा अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहिब क़िल्बा

रोज़ा इस्लाम की बतायी हुई इबादतों में बड़ी अहमियत रखता है। रोज़ा एक ऐसी इबादत है जिसमें दिखावा नहीं होता और वह सिर्फ़ खुदा के हुक्म पर रखा जाता है। क्योंकि कोई शख्स भूखा-प्यासा इस वजह से नहीं रहता कि लोग उसकी तारीफ़ करें बल्कि उसकी असल चाहत यह होती है कि वह खुदा की रिज़ा और खुशी हासिल करे मगर इसके साथ ही यह बात भी याद रखनी चाहिए कि रोज़ा सिर्फ़ इस बात का नाम नहीं है कि आदमी सुबह से शाम तक फाका करे बल्कि रोज़े की कुछ शर्तें भी हैं जिन्हें रोज़ेदार को पूरा करना ज़रूरी है वरना उसका रोज़ा सही न होगा। यह सारी बातें बड़ी किताबों में तफ़सील के साथ लिखी हुई हैं।

एक खास बात रोज़े में यह भी है कि इससे आदमी के दिल में हमदर्दी का ज़ब्बा पैदा होता है क्योंकि जब कोई खुद भूखा-प्यासा रहेगा तो दूसरे भूखों-प्यासों और ग़रीब व परेशान लोगों की उसको क़द्र होगी और जो लोग ख़ूब खाते पीते रहते हैं उनको महसूस होगा कि ग़रीबों पर भूख में क्या गुज़रती है और जब कभी वह किसी भूखे को देखेंगे तो उनके दिल में हमदर्दी पैदा होगी कि हम इसकी मदद करें और उसकी इस तकलीफ़ को दूर कर दें इस तरह पूरे समाज में आपसी मदद का शौक़ उभर जायेगा। जब हमदर्दी का शौक़ हर एक दिल में पैदा होगा तो

फिर यह हमदर्दी सिर्फ़ भूख और प्यास ही साथ मख़सूस न रहेगी बल्कि हर तकलीफ़ में एक-दूसरे के साथ हमदर्दी करने लगेगा और खुदगर्ज़ी या दूसरों की ज़रूरत और तकलीफ़ की तरफ़ से लापरवाही और बेतवज्जोही की आदत जाती रहेगी।

यह ज़ाहिर है कि इंसान की ज़िन्दगी कुछ इस तरह की है कि वह अकेला नहीं रह सकता बल्कि वह एक समाज का मोहताज है यानि वह अपने रहने-सहने, खाने-पीने, कपड़े और मकान वगैरा की तमाम ज़रूरतों में दूसरे इंसानों का मोहताज है और यह बात साफ़ है कि सब लोगों की हालत हमेशा एक सी नहीं रहा करती। आज कोई ग़रीब है तो कल अमीर हो गया और आज कोई अमीर है और दौलतमन्द है तो कल उसे एक वक़्त की रोटी भी न मिली। गर्ज ज़माने के हालात रोज़ बरोज़ बदलते रहते हैं और यह ज़रूरी नहीं कि इस वक़्त अगर कोई बड़ा दौलतमन्द है तो कल भी इसी हाल में बाकी रहेगा इसलिए अगर समाज के लोगों में आपसी हमदर्दी का शौक़ न पाया जाए तो फिर वक़्त पड़ने पर कोर्ट भी किसी की मदद न करेगा। चाहे उस वक़्त वह अमीर हो या ग़रीब हो और इसके नतीजे में पूरा समाज और पूरी क़ौम झगड़े और तबाही में पड़ जायेगी।

इसी लिए तो यह बात सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि हर एक शख्स के दिल में दूसरों के

साथ हमदर्दी का शौक पैदा हो और किसी वक्त इस शौक में किसी तरह की भी कमजोरी न आने पाए क्योंकि इस हमदर्दी के शौक की कमजोरी या बिलकुल ही न होना इन्सान की इज्तेमाओ ज़िन्दगी की तबाही की सबसे बड़ी निशानी है।

हम थोड़ी देर के लिए खुद अपने जिस्म और अपनी सेहत व तन्दुरुस्ती और अपने जिस्म के हिस्सों पर गौर करें तो हम यह देखेंगे कि हमारे पैर या हाथ या जिस्म के किसी मामूली से मामूली हिस्से में ज़रा फाँस लग जाती है या कहीं ज़रा सी खरोंच आ जाती है तो हमारा पूरा बदन उस हिस्से की तकलीफ को दूर करने में लग जाता है। ज़ाहिर है कि अगर इस तरह की मदद न हो तो हमारा बदन न तो सेहतमन्द रह सकता है और न ज़िन्दा ही रह सकता है।

इसी तरह की मदद और आपसी मदद का तरीका कौमों के बाकी रहने और तरक्की करने के लिए भी ज़रूरी है और यह मदद मुमकिन नहीं है जब तक लोगों के दिलों में एक-दूसरे के लिए हमदर्दी का शौक न हो।

गरज़ अब यह बात साफ हो गयी कि रोज़ा आपसी हमदर्दी के ज़बात को उभारता है और बे हिसाब तरक्की देता है और यही हमदर्दी का ज़बा वह चीज़ है जिस पर हमारी इनफिरादी और समाजी ज़िन्दगी की बका और तरक्की की बुनियाद है। □□□

अल्लाह की बन्दगी और वफ़ादारी

हम सच्चे मुसलमान उसी वक्त हो सकते हैं जब हम सच्चे दिल से अल्लाह की इताअत करें और उसके सच्चे और वफ़ादार बन्दे की तरह ज़िन्दगी गुज़ारें। यह बात हम सब जानते हैं कि अल्लाह ही ने हमें पैदा किया है जब कि हम कुछ

भी न थे। हमारा कही नाम व निशान तक न था। अल्लाह की ज़ाते अक़दस ही तो है जिसने हमें ज़िन्दगी की इज़्जत और दौलत अता फरमाई फिर सिर्फ़ ज़िन्दगी ही नहीं बल्कि अक़ल दी, समझ दी ताकि अपने लिये हम वह बातें इख़्तियार कर सकें जिनमें हमारे लिए अच्छाई हो और जिन चीज़ों में बुराई हो उन्हें छोड़ सकें और अपने आप को उनसे बचा सकें। अक़ल और समझ के अलावा अल्लाह ने हमें और भी बेशुमार नेमतें दी हैं और हमको पैदाईशी तौर पर ऐसी सलाहियतें बख़्शी हैं कि हम सारी काएनात पर अपना इक़तेदार काएम कर सकते हैं और हर चीज़ को अपने काबू में ला सकते हैं। कुर्आने हकीम में खुदा ने कई जगह फरमाया है कि काएनात की हर चीज़ को इंसान के लिए बनाया यानि उसके मातहेत कर दिया गया है। हमारे जिस्म की बनावट और जिस्म के हिस्सों की तरतीब में कैसी-कैसी खूबियाँ और मसलहतें और हिकमतें रखी गयी हैं जिन पर गौर करने के बाद अक़ल हैरान रह जाती है कि इस मिट्टी की मख़लूक को उसके अज़ीम ख़ालिक ने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया और क्या से क्या कर दिया और फिर उसके ज़िन्दा रहने के लिए कैसे-कैसे सामान किये गये। गर्मी की ज़रूरत थी तो उसका इन्तिज़ाम फरमाया। ठण्डक की ज़रूरत थी तो उसका इन्तिज़ाम किया। पानी और हवा के बिना ज़िन्दगी मुमकिन न थी तो इन चीज़ों को भी तैयार कर दिया ताकि हम बड़े चैन और राहत से ज़िन्दगी गुज़ार सकें। इन बेशुमार नेमतों में से किसी एक चीज़ को भी पैदा करने पर हमें कुदरत नहीं।

इस लिए हमारी पूरी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने पैदा करने वाले और पालने वाले की

बक़िया पेज8 पर

एक सबक इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब किब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे मई 2005 से आगे

ईश्वर की कल्पना बुराई से बचाती है

इंसान ग़रज़ का बन्दा (स्वार्थों का दास) है। अपनी भावनाओं और कामनाओं के आगे कोई रुकावट पसन्द नहीं करता। अपने मनोरथ की पूर्ति के लिए दूसरों के अधिकारों पर अतिक्रमण करता है। नैतिक रुकावटों को फाँद जाता है और सभ्यता और शिष्टता के टुकड़े-टुकड़े कर देता है। इसको अपनी जगह पर रखने के लिए प्रत्येक देश और प्रत्येक काल में क़ानून बनाया गया और क़ानून पर चलाने के लिए किसी शक्ति का अस्तित्व आवश्यक समझा गया, जो क़ानून तोड़ने वालों के अत्याचार को रोक सके। परन्तु यह शक्ति हर जगह निगरानी नहीं कर सकती और इसकी निगाह से छुपके अपराध करना यही नहीं कि सम्भव है, बल्कि अपराधी अपराध करते ही रहते हैं और क़ानून के पकड़ से बचते भी रहते हैं। कुछ लोग तो अपने प्रभाव और शक्ति के कारण अपने को क़ानून से ऊँचा समझने लगते हैं। इस परिस्थिति के निवारण के लिए अनिवार्य है कि मन मस्तिष्क से उस सर्व शक्तिमान ईश्वर की कल्पना की जाए, जिससे छिपना किसी प्रकार सम्भव नहीं और जिसके सामने कोई भी व्यक्ति क़ानून से ऊँचा नहीं।

ईश्वर की कल्पना एक आदमी को दूसरे से निकट करती है।

एक को दूसरे के निकट लाने के लिए किसी सम्पर्क और सम्बन्ध की आवश्यकता है। वह सम्पर्क सूत्र जितना दृढ़ होगा निकटता भी उतनी ही अधिक होगी। वतन वालों से प्रेम, अपने सजातीय भाईयों से स्नेह, कुटुम्ब एक होने के कारण समीपता, यह सब वह नाते हैं जो एक को दूसरे से निकट करते हैं। परन्तु इनमें से कोई भी सम्पर्क इतना दृढ़ नहीं है जितनी यह कल्पना कि सबका स्रष्टा एक है, अन्नदाता एक है, स्वामी एक है और उपास्य एक है, अतः सब उसके बन्दे और दास हैं। यह सम्पर्क एक इन्सान को दूसरे से सुपरिचित बनाता और निकट लाता है। इसलिए ईश्वरीय फरमान है कि 'तुम सब ईश्वर की रस्सी से सम्बद्ध हो जाओ और अलग-थलग न हो।'

सिफ़ाते सुबूतिया और सिफ़ाते सलबिया (सकारात्मक विशेषताएँ और नकारात्मक विशेषताएँ)

अल्लाह नाम है स्वयंभू का, जो अपने अस्तित्व में किसी का मोहताज नहीं है वह सरासर अस्तित्व है। उसकी ज़ात (हस्ती) और अस्तित्व में कोई अन्तर नहीं अदम (अनस्तित्व) का उसकी ज़ात में गुज़र नहीं। इसका अनिवार्य परिणाम यह है कि वह सरासर पूर्णतः है। उसमें कमी नाम है अदम यअ्नी अनस्तित्व का और परिशुद्ध व परिपूर्ण अस्तित्व में अदम की गुन्जाइश नहीं। उदाहरणतः अज्ञान कमी और दोष है। अज्ञान

क्या है? ज्ञान का न होना। कमज़ोरी क्या है? शक्ति और बल का न होना। जुल्म क्या है? न्याय का न होना। तो जब अल्लाह की ज़ात परिशुद्ध अस्तित्व है। उसमें न होने की गुन्जाईश ही नहीं उसमें कोई कमी भी नहीं पायी जा सकती और परिपूर्णता की प्रत्येक विशेषता मौजूद है। यह विशेषताएँ जो इसमें पायी जाती हैं "सिफ़ाते सुबूतिया" अर्थात् सकारात्मक विशेषताएँ या गुण कही जाती हैं। यह आठ हैं:-

- 1- "कदीम" अर्थात् आदि,
 - 2- "कादिर" अर्थात् सर्व शक्तिमान,
 - 3- "आलिम" अर्थात् सर्वज्ञाता,
 - 4- "हयि" अर्थात् जीवित,
 - 5- "मुरीद" अर्थात् इरादे अथवा संकल्प वाला,
 - 6- "मुदरिक्" अर्थात् अनुभूतिकारी,
 - 7- "मुतकल्लिम" अर्थात् वक्ता,
 - 8- "सादिक्" अर्थात् सत्यवक्ता
- सिफ़ाते सलबिया अर्थात् नकारात्मक विशेषताएँ या गुण भी आठ हैं:-
- 1- उसका कोई "शरीक" नहीं,
 - 2- "मुरक्कब" अर्थात् यौगिक नहीं,
 - 3- "मुतहयिज़" नहीं अर्थात् स्थान का मुहताज नहीं, क्योंकि साकार नहीं,
 - 4- "हुलूल" दुरुस्त नहीं अर्थात् अंतः प्रवेशन ठीक नहीं,
 - 5- "महल-ए-हवादिस" नहीं अर्थात् किसी चीज़ से प्रभावित नहीं हो सकता।
 - 6- "मरई" नहीं अर्थात् दृश्य नहीं,
 - 7- "मुहताज" नहीं उसे किसी बात या वस्तु की आवश्यकता नहीं।
 - 8- "सिफ़ात ज़ायद बर ज़ात नहीं" अर्थात् उसकी विशेषताएँ या गुण उसके अस्तित्व के अतिरिक्त नहीं।

सिफ़ाते सुबूतिया

1- "कदीम" (आदि) से है:- प्रत्येक वस्तु के विषय में यह सोचा जा सकता है कि वह कब से है। परन्तु अल्लाह के सम्बन्ध में यह सोचना ठीक नहीं कि वह कब से है! क्योंकि अगर यह माना जाए कि वह कभी न था तो प्रश्न होगा कि फिर हुआ कैसे! क्योंकि कोई चीज़ स्वतः अपनी स्रष्टा या रचयिता तो हो ही नहीं सकती जो वस्तु अस्तित्व में है, वही दूसरे को पैदा कर सकती है। अनस्तित्व से कोई चीज़ अस्तित्व में नहीं आ सकती। इस दशा में किसी अन्य को अल्लाह का स्रष्टा मानना होगा। तब तो फिर वास्तव में खुदा वह हुआ जिसने इसको पैदा किया। इसके अलावा ईश्वर परिशुद्ध अस्तित्व है। तो फिर यह कभी संभव नहीं कि वह अस्तित्वहीन हो जाए।

2- "कादिर" (सर्वशक्तिमान) है:- कोई भी चीज़ उसकी शक्ति से बाहर नहीं। जैसा कि कुआन मजीद में बार-बार कहा गया है कि अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है और कोई चीज़ भी उसकी शक्ति से बाहर नहीं है। जैसा कि कहा जा चुका है कि असमर्थ होना शक्तिहीनता का नाम है ईश्वर की ज़ात में अनस्तित्व की कल्पना नहीं। अतः यह कहना ठीक नहीं कि अमुक बात से अल्लाह असमर्थ है।

कुछ लोग विचार करते हैं कि असम्भव बातों की अल्लाह शक्ति नहीं रखता। इसका उत्तर यह है कि किसी चीज़ को अस्तित्व में लाने हेतु केवल कारक में शक्ति होना ही नहीं पर्याप्त है बल्कि उस वस्तु में भी अस्तित्व ग्रहण करने की क्षमता होना चाहिए। चूँकि असम्भव बातों में अस्तित्व ग्रहण करने की क्षमता ही नहीं। अतः ईश्वर की शक्ति का इनसे सम्बन्ध नहीं हो सकता। (जारी)

“खुदा तुम लोगों की जिन्दगी आसान करना चाहता है।”

(सूर-ए-निसा)

इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद

(पिछले शुमारे से आगे)

पच्छिम का घरेलू सिस्टम

यूरोप और अमरीका में घराने का जो सिस्टम है वह निराधार (बे बुनियाद) है। इस सिस्टम की नक़ल करना ठीक नहीं है बल्कि इसमें ही मरन है। वहाँ वाले किसी पाक मक़सद से शादी नहीं करते बल्कि सेक्स के लिए शादी रचाते हैं। वहाँ नेक मर्द औरत बहुत कम हैं। यही वजह है कि यूरोप और अमरीका में जंगल की आग की तरह ख़राबियाँ फैल रही हैं। पश्चिम के ज़्यादातर मर्द औरत बुराई और विनाश का ज़माना बिताकर शादी करते हैं और अपने बच्चों को क़ेश में डाल देते हैं। कई साल बाद बच्चे को ले आते हैं। वह बच्चा बाप की चाहत और माँ के प्यार से अन्जान रह जाता है। उस पर भी माँ-बाप उसे बुराई के ठिकानों पर ले जाते हैं। फिर वही उसे स्कूल में Admit कराते हैं ताकि दिखावे की शिक्षा हो सके। अठ्ठारह साल की उम्र में उसे अपने से अलग कर देते हैं और समाज के तरस खाने को छोड़ देते हैं।

ये लोग अगर अपने बच्चों को घर और स्कूल में शराफ़त, शिष्टाचार, Economics और

हुज्जतुल इस्लाम प्रो० हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु० र० आबिद

आचरण का पाठ पढ़ायें तो मुश्किल ही हल हो जाएगी मगर वे आत्मा और आध्यात्मिक नहीं देखते। जब ये राज और समाज बनाते हैं तो समाज बुराई की जड़ और राज धरती पर बसने वाले कमज़ोरों, दलितों का ख़ून चूसते हैं। पच्छिम की युनिवर्सिटियों और स्कूलों में पढ़ने वालों ने जो अत्याचार, जुल्म किया है क़यामत तक उसकी भरपाई नहीं हो सकती। अगर उनमें कभी सुख चैन दिखाई पड़े और वे तमीज़ से दिखें तो यह उनके लालच, खुशामद की वजह से है। उनकी कहानी यह है कि जैसे कोई अपने दोस्तों से कहे कि मैंने बिल्ली को अच्छी तरह सधाया है और इसे वह तमीज़ सिखायी है कि अगर खाने में कई तरह की डिशें भी हों तो मैं उसके हाथ में मोमबत्ती दे देता हूँ जिसकी रौशनी में मेहमान खाना खाते हैं। दोस्त जवाब दे कि इस पर भी बिल्ली पर भरोसा नहीं किया जा सकता अगर आप मेरी दावत करें तो यह बात साबित कर दूँगा। उसने दोस्त की दावत कर दी। यह पहुँचे तो देखा कि बिल्ली चुने हुए खानों से बेपरवाह हाथ में मोमबत्ती लिए बैठी है। उसने चुपके से अपने जेब से चूहा निकाला और खाने की मेज़ पर

रख दिया। चूहे को देखते ही बिल्ली ने मोमबत्ती फेंक दी और चूहा पकड़ने के चक्कर में सब तितर-बितर हो गया। इससे मेहमानों और घर वालों को बड़ी कोफ़्त हुई।

यूरोप और अमरीका वालों की Training ऐसी ही होती है कि जब तक वह अपना खाना नहीं देखते वे तमीज़ तहज़ीब से रहते हैं मगर जैसे ही छोटे कमज़ोर मुल्कों के सोने, तेल और दूसरे खनिजों पर उनकी आँख पड़ती है तो वे दूसरों के हक़ हड़पने को हाथ से तमीज़ की मोमबत्ती फेंक देते हैं और फाड़ने वाले जानवरों (दरिन्दों) की तरह दौड़ पड़ते हैं और कमज़ोर देशों के माल पर और उनकी अध्यात्मिक सम्पदा

पर हमला कर देते हैं, उसके लिए बेगुनाहों के खून से अपने हाथ रंग लेते हैं। पच्छिम में बुराई, सेक्स, बदतमीज़ी, मारधाड़, लूट-खसोट, गन्दगी और गुनाहों की जड़ घर और घरेलू सिस्टम की ख़राबी है। अगर अमरीका और यूरोप के घरों में खुदा की याद होती और वहाँ तस्बीह की गूँज होती तो उनमें शरीफ़, शिष्ट इन्सान निकलते। लेकिन पश्चिम वाले सच सच्चाई से दूर हैं। इसलिए नतीजे भी कड़वे हैं। सिस्टम ग़लत है, अपनाने के काबिल नहीं। जो उनका अनुकरण करेगा, उनके रास्ते पर चलेगा वह उनसे भी ज़्यादा बुरा होगा।

(जारी)

बक़िया रोज़ा और आपसी भाईचारा

बन्दगी और इताअत करें उसके हर हुक्म पर चलें और कभी कोई ऐसा काम न करें जिसमें उसकी नाराज़गी और नाखुशी हो और वह उस काम को पसन्द न फरमाता हो न तो हम ऐसा काम ज़ाहिर बज़ाहिर करें और न छुप कर करें क्योंकि हमारा अल्लाह हमारे हर अमल को जानता है। वह हमारे दिलों के तमाम भेद जानता है। और उससे हम कोई बात भी नहीं छुपा सकते। इसलिए उसकी बन्दगी और उससे हमारी वफ़ादारी सिर्फ़ उसी वक़्त साबित हो सकती है जबकि हम अपनी छुपी हुई और खुफ़िया बातों में भी उसकी खुशी का ख़याल रखें और उससे डरते रहें उस तरह जिस सूरत से हम अपनी ज़ाहिरी बातों में उसकी

मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न करें।

इस्लाम के लफ़्ज़ के माने तो आप जानते ही होंगे और जो शख्स नहीं जानता उसे याद रखना चाहिए कि इसके माने हैं फरमाँबरदारी, इताअत करना और हुक्म मानना इसलिए मुसलमान वही है जो अपने अल्लाह को मानने वाला हो और उससे वफ़ादारी करे और उसका हुक्म माने। उसकी फरमाँबरदारी यह है कि मुसलमान अपने खुदा के हर हुक्म पर अमल करे और उससे वफ़ादारी यह है कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किसी दूसरे का सहारा न तलाश करे और उस काम में किसी की भी बात न माने जिसमें खुदा के हुक्म को न मानना और बगावत ज़ाहिर होती हो।

□□□

प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी की पुस्तकें और शोध-लेख

मु० र० आबिद

मौलाना सै० अली मुहम्मद नक़वी (जन्म 1 जनवरी 1953) का एक जीवन परिचय पिछले अंक में दिया गया। यहाँ उनकी पुस्तकें शोध-लेखों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है। ज्ञान और लेखनी उनकी पैत्रिक सम्पत्ति है जो गुफ़रॉमॉब से अटूट क्रम से उन तक पहुँची।

उनकी पहली रचना शायद “पाँच किरनें” है जो 18 साल की आयु में लिखी गई और 1972 में अल्लामा कामूनपूरी की भूमिका के साथ प्रकाशित हुई। रचना के अपने पहले चरण में उन्होंने ‘आमदनामा’ (फारसी व्याकरण), नहवे मीर (अरबी व्याकरण), मीज़ान (अरबी व्याकरण), मुन्शइब (अरबी व्याकरण) की व्याख्याएँ लिखीं। इस प्रकार तर्कशास्त्र (Logic) और दर्शनशास्त्र से भी सम्बन्धित व्याख्याएँ लिखीं।

मौलाना की महत्वपूर्ण कृतियाँ निम्नलिखित हैं, जो ज़्यादातर प्रकाशित हो चुकी हैं:-

1- कुर्आन मजीद की तफ़सीर (व्याख्या)

The Meaning of the Holy Quran (I) IIDE Publications, New Delhi, 2000/Rep.2005

मौलाना के नवीनतम लेखन व्यास्तता का पहला भाग है। इसमें कुर्आन मजीद के पहले पारे का अनुवाद और तफ़सीर है। साथ में कुर्आन मजीद के अरबी आलेख को अंग्रेज़ी (रोमन) लिपि में भी बदला गया है। इस Transliteration के लिए उन्होंने नयी पद्धति विकसित की है। मौलाना डा० कल्बे सादिक के शब्दों में यह अनुवाद न तो ज़्यादा ‘स्वतंत्र’ है और न ज़्यादा ‘शाब्दिक’ है। इसका

केन्द्रीय विचार कुर्आन को एक मार्गदर्शक ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत कर निजी और सामाजिक जीवन के लिए कार्यत्मक मार्गदर्शन का पाठ देना है।

2- उसवए जावेद (फारसी) बुन्यादे शहीद, ईरान 1362 हि० श० / 1983-84 ई०

रसूल (स०) और मासूम इमामों (अ०) के जीवन-चरित्र की प्रस्तुति है। इसमें लेखक ने अपना विचार दिया है कि जिस तरह तफ़सीर को एक नियमित ज्ञान के रूप में विकसित किया गया उसी तरह मासूमों (अ०) के जीवन व चरित्र के अध्ययन करने, समझने के लिए उसे एक नियमित शास्त्र के रूप में विकसित करने की ज़रूरत है। इस प्रस्तावित शास्त्र को ‘तफ़सीर-उस-सीरह’ का नाम दिया गया है। इस शास्त्र को सिर्फ ऐतिहासिक विवरण पर केन्द्रित न करना चाहिए बल्कि इन पाक जीवनों के अध्ययन एवं विश्लेषण और उनसे मार्ग पाने व सीख लेने पर केन्द्रित करना चाहिए। इस पुस्तक के द्वारा लेखक ने अपने विचारों को कर्णान्वित किया है।

3- जामिआ शिनासीए गर्बगराई (फारसी) भाग-1, अमीरे कबीर पब्लिकेशन, तेहरान 1362 हि० श० / 1983-84 ई०।

4- जामिआ शिनासीए गर्बगराई (फारसी) भाग-2, अमीरे कबीर पब्लिकेशन, तेहरान 1363 हि० श० / 1984-85 ई०।

दो भागों में प्रकाशित इस शोध रचना में मुस्लिम समाजों के पश्चिमीकरण (Westernization) की समाज-शास्त्रीय समीक्षा है। पहले भाग में

मुस्लिम समाजों के पश्चिम-सत्कार (पश्चिमी शिक्षा पद्धति और टेकनालॉजी अपनाने) का इतिहास और उसके विभिन्न चरणों का गहरा अध्ययन है। दूसरे भाग में मुस्लिम समाज, परिवार (Family), मूल्यों, संस्कृति और राजनैतिक संस्थाओं पर पश्चिम के प्रभाव का विश्लेषण है। लेखक ने निम्न चरणों को सांकेतिक किया है:-

(क) पश्चिम-सत्कार: पहले चरण में मुस्लिम समाज पश्चिमी शिक्षा पद्धति और उनकी टेकनालॉजी अपनाता है।

(ख) पश्चिमीकरण: दूसरे चरण में पश्चिम-सत्कार की ओर झुकाव अपनी जड़ें पूरी तरह जमा लेता है और समाज पश्चिम-भक्ति और पश्चिम के अन्धे अनुकरण में ग्रस्त हो जाता है।

(ग) आत्म-ज्ञान/स्वयं की पहचान: तीसरे चरण में 'स्वयं' की ओर प्रगतिशील वापसी होती है या आत्मज्ञान होता है। इसका उदाहरण अफगानी अब्दुह, अल्लामा 'इक़बाल', मौलाना अबुलकलाम 'आज़ाद', शहीद मुतहरी और डा० अली शरियती हैं।

यह एक अनुसरणीय समीक्षा है। इसी तरीके से दूसरे धर्म और समाजों के सम्बन्ध से भी समीक्षा की जा सकती है।

5 से 8- जामिआ शिनासी आमोजिशी (फारसी), शिक्षा मंत्रालय, ईरान 1-4 क्रमानुसार 1361 हि० श० (1982-83), 1362 हि० श० (1983-84), 1363 हि० श० (1984-85), 1363 हि० श० (1984-85)

समाजशास्त्र की पाठ्य-पुस्तकों का क्रम है। इनमें समाजशास्त्र के महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में इस्लामी दृष्टिकोण पता लगाने का एक प्रयास है। धर्म के समाजशास्त्र पर यह महत्वपूर्ण और उदाहरणीय रचना-कार्य है। इस पाठ्यक्रम में इस्लामी दृष्टिकोण से धर्म का समाजशास्त्र विकसित करने का प्रयत्न है। इन पुस्तकों को ईरान के

शिक्षा मंत्रालय ने देश भर के कक्षा IX, X, XI एवं यूनिवर्सिटी स्तर के B.Ed. के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। यह वह सम्मान है जो किसी पहले अ-ईरानी व भारतीय को दिया गया।

9- अल-इत्जाहुल गर्बी (अरबी) तेहरान।

पुस्तक 'जामिआ शिनासी गर्बगराई', का अरबी अनुवाद है।

10- इस्लामी विश्वासों और कर्मों की हस्तपुस्तिका (अंग्रेज़ी)

A Manual of Islamic Beliefs and Practice
Mohammad Trust of Great Britain and Northern Ireland, London, 1990 (PP.256)

धर्म विश्वासों और धर्म-सम्बन्धी कर्मों का संक्षिप्त परिचय है जिसे मुहम्मदी ट्रस्ट ने लन्दन से प्रकाशित किया है। नवीनता की प्रस्तुति है। इसमें लेखक ने धर्मशास्त्र के परम्परागत अध्याय प्रणाली से अलग हटकर अपने से निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटा है:-

1- धर्म विश्वास

2- आचार (आचरण व मूल्य)

3- शिष्टाचार (निजी या व्यक्तिगत)

4- सामूहिक/सामाजिक शिष्टाचार (सभ्यता)

5- धर्म-प्रथा/रीति (जैसे अक़ीका, निकाह आदि)

6- भक्ति (नमाज़, रोज़ा, हज आदि)

इस श्रेणीकरण के पीछे सुव्यवस्थित सुनियोजित ढंग और वैज्ञानिक सोच है।

11- सैरी दर अन्देश-ए-दीनी हिन्द (फारसी) शीघ्र प्रकाशित होने को

लगभग 1800 पृष्ठों पर आधारित दो भागों में यह शोध कृति तुलनात्मक धर्म अध्ययन को समर्पित है। इसमें भारतीय धार्मिक विचारों के विकास की एक परिकल्पना प्रस्तुत की गई है।

लेखक के विचार में मानव अपनी प्रकृति से एक ऐसे परमात्मा यथार्थ की खोज करता है जो पूर्णतम सौन्दर्य, शक्ति और जीवन जैसी विशेषता वाला हो। लेकिन अन्धेरे में इस यथार्थ को टटोलने में या ढूँढन में आदमी विभिन्न चरणों पर अग्रसर हुआ:

(1) पहला चरण:— मूल सिद्धान्त प्रकृति-भक्ति है, इसमें उपासना भजन, गीत है, यहाँ कवि (भजन-कार) का बोलबाला है।

(2) दूसरा चरण:— मूल सिद्धान्त प्राण-भक्ति (Animism) है इसमें पूजा-प्रथा जादू है, यहाँ जादूगर या तान्त्रिक सर्वोपरि है।

(3) तीसरा चरण:— मूल सिद्धान्त सगुणभक्ति है। धर्म-प्रथा मूर्तिपूजा है। यहाँ पुजारी ऊपर है।

(4) चौथे चरण:— मूल सिद्धान्त निगुणभक्ति, ऐकेश्वरवाद है। धर्म-प्रथा एक ईश्वर की भक्ति है। यहाँ धर्मगुरु (आलिम) सर्वोच्च है।

(5) पाँचवाँ चरण:— मूल सिद्धान्त सूफीवाद/भक्तिवाद है, या सम्पूर्ण ऐकेश्वरवाद है। धर्म-प्रथा प्रार्थना के अतिरिक्त भक्ति साधना है। यहाँ साधु (आरिफ़) सर्वोपरि है।

12— इस्लाम व मिल्ली गराई (फारसी), दफतरे नशरे फरहन्ग इस्लामी, तेहरान 1360 हि0 श0 (1981-82)

□ अल-इस्लाम वल कौमियह (अरबी अनुवाद) साज़माने तब्लीगाते इस्लामी, तेहरान 1404 हि0 (1983-84)

□ L, Islam et le Nationalisme ou le Nationalisme selon l' Islam (फ्रांसीसी अनुवाद) Organization pour la propagande Islamique.

□ Islam and Nationalism (अंग्रेज़ी अनुवाद) Islamic Propagation Organization, Tehran.

□ Islam ve Milliete Cilic (तुर्की अनुवाद) Islami Teblig Te Kilati.

□ Eslaam wa milliete Khwaazee. (कुर्दी अनुवाद)

'इस्लाम और पश्चिम की राष्ट्रीयता' के विषय पर एक अनोखी पुस्तक है। कई अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में मूल फारसी पुस्तक के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

इसका केन्द्रीय विचार है:— राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति प्राकृतिक बात है और यह मानवीय प्रकृति का एक हिस्सा है। इसे इस्लाम ने माना है और इसका प्रबल आवाहन भी किया है। लेकिन पुनर्जागरण (Renaissance) के बाद पश्चिम ने ईश्वर और धर्म को नकारा जिससे आन्तरिक व बाह्य शून्य पैदा हो गया क्योंकि इन्सान ईश्वर या धर्म के किसी न किसी प्रकार के विश्वास के बिना नहीं रह सकता। इसलिए पश्चिम को नया धर्म, नया ईश्वर बनाने की ज़रूरत हुई। 'राष्ट्रीयता' जैसा कि पश्चिम में प्रचलित की गई वह इसी आन्तरिक सामाजिक ज़रूरत के पूरा करने को एक बनावटी धर्म (Pseudo-religion) था। इसने रंग, भाषा, जाति, इतिहास आदि का वर्चस्व बनाया। नतीजे में दो विश्वयुद्ध थे।

इस्लाम ने देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम पर बल दिया लेकिन यह झूठे खुदा, अवतार और बनावटी धर्म को स्वीकार नहीं कर सकता।

13— इस्लामी शब्दकोष (अंग्रेज़ी)

A Dictionary of Islamic Terminology, Islamic Publication, Tehran 1364H (sh.)/1985-86

यह इस्लामी शब्दावली का शब्दकोष है।

14— इन्दियालोजी इंकिलाबी 'इक़बाल' (फारसी), इन्तिशाराते इस्लामी, ईरान 1986

अल्लामा 'इक़बाल' के धार्मिक विचारों और उनकी 'खुदा' व 'खुदी' ('ईश्वर', 'स्वयं') की परिकल्पना का परिचय कराया गया है। इससे लेखक ने ईरान को एक तरह से 'इक़बाल' के

धार्मिक विचारों से परिचित कराया है।

15— शिगोफ़र्ड इन्क्लाबी इस्लामी दर मिस्त्र अरब दुनिया खासकर मिस्त्र (Egypt) में इस्लामी क्रान्ति के बीजारोपण का विस्तृत अध्ययन है। पुस्तक मिस्त्र में जमालुद्दीन अफ़ग़ानी के समय से मुस्लिम आन्दोलन के आरम्भ की बात करती है। इसमें आधुनिक मुस्लिम आन्दोलनों के उभरने और उनकी सैद्धान्तिक विशेषताओं का अवलोकन किया गया है। यह वास्तव में एक पूरा सिद्धान्त प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसे लेखक ने आन्दोलन-शास्त्र (Movementology) का नाम दिया है। इसका केन्द्रीय विचार यह है कि धर्म की समाजिकता दर्शाती है कि धार्मिक आन्दोलनों के बारे में हर धर्म अपने खास विचार रखता है। इस प्रस्तुति में इस्लामी परिपेक्ष में आन्दोलनों को सुन्नती (पारम्परिक) तजदीदी (पुनर्जीवनदायी:—परम्परा तोड़कर मूल स्रोत की ओर पलटने के आन्दोलन) और तजदुदी (आधुनिकतावादी:—आधुनिक पश्चिमी विचारों के अनुसार धर्म को नये अर्थ देने वाले) श्रेणियों में बाँटा है। लेखक के अनुसार हिन्दु, ईसाई और दूसरे मतों के धार्मिक आन्दोलनों के विश्लेषण के लिए इसी विभाजन को धर्म के समाजशास्त्र के नये उपकरण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

16— नज़रियाते इक़बाल दर सीस्तमे आमोज़िशी व फ़रहन्गे इस्लामी (इस्लामी संस्कृति और शिक्षा पद्धति के बारे में ‘इक़बाल’ के विचार)

उपरोक्त पुस्तकों के अलावा सौ से अधिक शोध-लेख प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें कुछ ये हैं:—

□ मुतहहरी— समकालीन ईरानी इस्लामी चिन्तक (दैनिक जमहूरी इस्लामी 24 नवम्बर 1980)

□ इस्लाम के सेकुलर व धार्मिक ज्ञान का एकीकरण (दैनिक जमहूरी इस्लामी 16 दिसम्बर 1980)

□ शीआ इस्लाम के समकालीन प्रचार में तबातबाई का योगदान (दैनिक जमहूरी इस्लामी 24 दिसम्बर 1980)

□ पश्चिमी गणतन्त्र के प्रति समकालीन इस्लामी व्यवहार (दैनिक जमहूरी इस्लामी 31 मार्च 1983)

□ इमामत का शीई विश्वास और उसके राजनैतिक उपक्रम (दैनिक जमहूरी इस्लामी 22 नवम्बर 1980)

□ शीआ इमामों के जीवन के राजनैतिक तत्व (दैनिक जमहूरी इस्लामी 7 जुलाई 1980)

□ इमामे जाफ़र सादिक (अ0) और शीआ मत (व धर्म विधिशास्त्र) के नियमीकरण में उनका योगदान (दैनिक जमहूरी इस्लामी 1 जनवरी 1981)

□ मुस्लिम राजनैतिक विचार में इस्लामी समुदाय के एकता का सिद्धान्त (दैनिक जमहूरी इस्लामी 9, 10, 11 जनवरी 1981)

□ समकालीन ईरानी समाज में पश्चिमी पूर्वशास्त्रियों का रोल (दैनिक जमहूरी इस्लामी 1 मार्च 1981)

□ पारम्परिक इस्लामी शिक्षा पद्धति पर पश्चिमी प्रभाव के कुछ रूप (दैनिक जमहूरी इस्लामी 5 जनवरी 1982)

□ पश्चिम के चैलेन्ज का इस्लामी जवाब: तीन चरण (दैनिक जमहूरी इस्लामी 31 अगस्त, 3, 6, 12, 14 सितम्बर 1980)

□ डा0 अली शरीअती और ‘इन्सान’ (‘मानव’) का उनका विचार (दैनिक जमहूरी इस्लामी 22 जून 1981)

□ इस्लाम को एक गतिशील राजनैतिक विचारधारा के रूप में प्रस्तुत करने में मुतहहरी का योगदान (दैनिक जमहूरी इस्लामी 2 अप्रैल 1983)

□□□

प्रशस्ति-पत्र

बखिदमते अक़दस काएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी साहिब

कानपुर में काएदे मिल्लत का पुरखूलूस व पुरजोश इस्तेक़बाल

जिनके रुतबे हैं सिवा

काएदे मिल्लत की मुजाहिदाना ज़िन्दगी और मुखलिसाना कोशिशों के एतेराफ व एहतेराम में कानपुर जैसे मशहूर ज़माना शहर में शीआ, सुन्नी बल्कि हिन्दु मुस्लिम की शिरकत से एक इस्तेक़बालिया जुलूस निकाला गया और पटकापुर में इस्तेक़बालिया जलसा 17 सितम्बर 2006 इतवार को मुनअकिद हुआ। इस प्रोग्राम का आयोजन "मौलाना कल्बे जवाद फ़ैन्स एसोसिएशन" की तरफ से हुआ था। स्वागत पुराने गंगा पुल पर तक़रीबन 11 बजे हुआ जहाँ से काएदे मिल्लत अपने चाहने वालों से भरी हुई बसों, जीपों, कारों और मोटर साईकलों के बीच पटकापुर से मिले चौराहे तक आये और वहाँ से नवाब साहब पटकापुर के अज़ाख़ाने तक जिस-जिस गली से जुलूस गुज़रता रहा फूलों की बारिश लगातार हर घर से होती रही। कितने कुन्टल फूल काएदे मिल्लत पर निछावर कर दिये गये इसका अन्दाज़ा यकीनन मुश्किल है अगरचे ऐसा ही प्रोग्राम कुछ दिन पहले महल्ला शीश महल, लखनऊ की तरफ से हुआ था और वह भी अपनी मिसाल आप था। पूरा महल्ला काएद के स्वागत में दुलहन बना दिया गया था, काश यह बात कज फ़ि़र व कज अमल मोलवियों के समझ में आ जाती कि इज़्ज़त अल्लाह देता है।

(असीफ़ जाएसी)

भारतवर्ष में शिया समुदाय का सबसे प्रसिद्ध व सम्मानित घराना "ख़ानदाने इज्तेहाद" है जिसको विश्व में अपनी शिक्षा प्रसार व कार्यों के संदर्भ में सम्मान की दृष्टिसे देखा जाता है जिसके संस्थापक भारत के प्रथम शिया "फ़कीह" (विद्वान) "आयतुल्लाहिल उज़मा जनाब सैय्यिद दिलदार अली नक़वी गुफ़रान मआब" हैं जिन्होंने माहे रजब 1200 हिजरी में शीओं को एक सम्प्रदाय का स्थान देकर पहली बार "नमाज़े जुमा" व "नमाज़े

जमाअत" स्थापित की और लखनऊ में मदरसए "इल्म व इज्तेहाद" की स्थापना के बाद हज़रत गुफ़रान मआब के पाँच योग्य उत्तराधिकारियों ने इस मदरसे को चौमुखी उन्नति देकर शिक्षा के ऐसे शिखर पर पहुँचा दिया कि सारे विश्व के शिक्षित समाज में गर्व और सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा।

सारे भारत में उलमा व विचारक फैला दिये गए हर जगह धार्मिक वातावरण तैय्यार होने लगा शैक्षिक व धार्मिक विचारों का आदान प्रदान

होने लगा समाज में प्रचलित बेजा रस्मों रिवाज व कुरीतियों पर प्रहार किया गया और एक स्वच्छ शिया समाज का निर्माण किया गया।

उसी महान परिवार के योग्य उत्तराधिकारियों में **काएदे मुअज़्ज़म हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी** हैं जो अपने महान पूर्वजों की स्थापित परम्पराओं और कार्यों को बड़ी कुशलता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

काएदे मुअज़्ज़म ने अपने स्वर्गवासी पिता **प्रोफेसर मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद साहब किब्ला** के अकस्मात निधन के कारण उनके अधूरे कार्यों को बड़ी ही कुशलता और परिश्रम से पूरा किया जो सर्वविदित है।

काएदे मुअज़्ज़म ने एक ओर अज़ादारी के लिए कुर्बानियाँ दीं और अज़ादारी के रुके हुए जुलूसों को बहाल कराया यही नहीं बल्कि वक्फ की सम्पत्तियों को हासिल करने के लिए देश व्यापी एक आन्दोलन आरम्भ किया परिणाम स्वरूप वक्फ की बड़ी-बड़ी सम्पत्तियाँ हासिल करके गरीबों विधवाओं और ज़रूरतमन्दों में वितरित की तथा वक्फ में पुनः उन धार्मिक स्थलों को भी प्राप्त किया जो पूर्व में वक्फ से अलग कर दिये गये

इसका एक जवलन्त उदाहरण इमामबाड़ा सिबतैनाबाद है तथा हुसैनाबाद की जीर्ण शीर्ण इमारतों का पुनरुद्धार जनाब के अथक प्रयत्नों से सम्पन्न हुआ। शिक्षा के क्षेत्रों में जनाब ने **“नूरे हिदायत फाउण्डेशन”** बनाया तथा **“शुआ-ए-अमल”** के नाम से एक पत्रिका निकाली जो हर मास निकलती है और भारत की एक स्थापित पत्रिका है।

मौलाना ने अपने स्वर्गीय पिता द्वारा महिलाओं के लिए स्थापित मदरसे **“मकतबतुज्ज़हरा”** का और विस्तार किया जो आने वाले समय में महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धित आवश्यकताओं के लिए प्रयाप्त सिद्ध होगा। इसके साथ ही साथ शिया धर्म के विद्यार्थियों के लिए काएदे मिल्लत **“मदरस-ए-इज्तेहाद हज़रत गुफ़रान मआब”** को कायम करने की कोशिश कर रहे हैं।

आगे हम सब **“मौलाना कल्बे जवाद फ़ैन्स एसोसिएशन”** की ओर से काएदे मिल्लत की सेवा में जनाब द्वारा किये गये कार्यों, सेवाओं के लिए सदा आभारी रहेंगे तथा सिपास नामा पेश करके हम सब तथा संस्था अपने को गर्वन्वित महसूस करती है।

मिनजानिब:-

मौलाना कल्बे जवाद फ़ैन्स एसोसिएशन

सफेद कोठी, हाता नवाब साहब, कानपुर

इदारा

मुख्य समाचार

आखिरकार पोप ने आलमे इस्लाम से मुआफी माँगी

वेटिकन सिटी। ईसाइयों के रूहानी पेशवा पोप ने इस्लाम और उसके जेहाद के खयाल को गलत तौर पर पेश किया। उन्होंने जर्मनी की एक युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए चौधवीं सदी के बाज़ीतीनी ईसाई शहंशाह मेनोईल द्वितीय के रसूल खुदा (स0) के सिलसिले में किये गये एतेराज़ों का हवाला दिया: “मुझे दिखाओ मुहम्मद ऐसा क्या लाए जो नया था और वहाँ तुम पाओगे चीज़ें जो बुरी और ग़ैर इंसानी हैं जैसे कि उनका यह फरमान है कि तलवार के ज़ोर पर इस दीन को फैलाओ जिसकी वह तबलीग करते हैं।”

रसूले अकरम (स0) के बारे में पोप के उस गुस्ताखाना बयान पर हिन्दुस्तान समेत दुनियाभर के दानिश्वरों ने इसकी सख्त मज़्मत की। और जगह-जगह पर मुसलमानों ने इस तौहीन आमेज़ रिमाक्स पर सख्त एहतेजाज करते हुए पोप से माफी माँगने का मुतालबा किया है। लखनऊ, हैदराबाद, मुम्बई, श्रीनगर, दिल्ली में मुसलमानों ने ज़बरदस्त प्रदर्शन किये और कहा कि पोप के नाज़ेबा और तौहीन आमेज़ कलमात से दुनिया में अमन के बजाए नफरत में इज़ाफा हुआ है।

लखनऊ की तारीखी आसफ़ी मस्जिद में हज़ारों प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए काएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने पोप के बयान को अफसोसनाक बताते हुए यह सवाल किया कि क्या ईसाई मज़हब में यह है कि अगर कोई एक पत्थर मारे तो दूसरा गाल भी आगे बढ़ा देना चाहिए? लेकिन बोसनिया में जिस तरह से हैवानियत और जुल्म सितम हो रहा है उसके बारे में पोप का एक भी बयान नहीं आया। बल्कि मुसलमानों को दहशतगर्द बना डाला। मौलाना ने इस्लाम में जेहाद के फलसफ़े पर भी रौशनी डालते हुए कहा कि कुर्आन मजीद

ने जेहाद का पूरा फलसफ़ा ही बता दिया है कि देखो जब तक दुश्मन की तरफ से जंग की शुरुआत न हो जंग न करना और जंग सिर्फ उसी से करना जो तुमसे जंग करने आए यानी जो जंग से भाग जाए उससे जंग न करना और जंग में हद से आगे न बढ़ना।

उन्होंने कहा कि अगर कोई अंधेरे में शमा जला दे तो यह उसका अंधेरे के खिलाफ जेहाद है और अगर कोई मदरसा या स्कूल खोल दे तो यह उसका जिहालत के खिलाफ जेहाद है। लिहाज़ा पोप का यह कहना कि (अल्लाह की पनाह) “रसूल सिवाए बुराईयों के कुछ भी नहीं लेकर आए। आज जो दहशतगर्दी फैली है (अल्लाह की पनाह) वह कुर्आन और रसूल (स0) की वजह से है।” उनकी यह बातें सरासर गलत हैं और उनको चाहिए कि वह मुसलमानों से माफी माँगें।

आखिरकार पोप ने आलमे इस्लाम के मुसलमानों से माफी माँगते हुए कहा कि इस्लाम से मुताल्लिक मेरे कलमात से जो नाराज़गी पैदा हुई उस पर मुझे गहरा अफसोस है और मैंने जेहाद के बारे में अह्द वुस्ता की एक किताब का जो हवाला दिया था वह मेरे खयालों को नहीं पेश करता।

पोप का मौक़िफ वेटिकन की उन तालीमात के बिल्कुल मुताबिक है कि चर्च मुसलमानों का एहतेराम करता है जो एक खुदा को मानते हैं। बयान में यह भी कहा गया कि पोप इस्लाम के मानने वालों का बहुत एहतेराम करते हैं। वेटिकन में अपने साप्ताहिक सम्बोधन में पोप ने कहा कि मैं उम्मीद करता हूँ कि ख़ास तौर से इस्लाम से मुताल्लिक जिसके मानने वाले सिर्फ एक खुदा की इबादत करते हैं और जिनके साथ मिलकर हम इन्सानी बिरादरी के लिए समाजी इंसाफ और आज़ादी की हिफाज़त करते हैं।

इराक़ पर अमरीका अपनी दहशतगर्दी बन्द करे : मौलाना कल्बे जवाद

लखनऊ। इराक़ में ज़ाएरीन पर हो रहे जुल्म और अमरीका की दहशतगर्दी के खिलाफ मुस्लिम मुल्क अमरीका पर दबाव बनाएँ और मुस्लिम मुल्क एक होकर अमरीका के खिलाफ प्रदर्शन करें कि अमरीका अपनी फौज़ें इराक़ से वापस बुलाए। मौलाना कल्बे जवाद साहब ने अपनी रिहाइशगाह पर एक प्रेस कान्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिस तरह ज़ाएरीन पर जुल्म हो रहे हैं और उन्हें

हलाक किया जा रहा है उसकी जितनी मज़्मत की जाए कम है। उन्होंने इराक़ में तीन हिन्दुस्तानी ज़ाएरीन और दूसरे ज़ाएरीन की मौत पर रंज व ग़म का इज़हार किया। उन्होंने एक साप्ताहिक अख़बार “न्यू स्टेट मैन” में छपी इस ख़बर पर एतेराज़ किया जिसमें अयातुल्लाह खुमैनी रह0 को डिक्टेटर बताया गया है। मौलाना ने कहा कि उनको तानाशाह कहना एक शर्मनाक बात है।

दुनिया को असल न्युकिलयाई खतरा अमरीका से : अहमदी नेजाद **जार्ज बुश शैतान, संयुक्त राष्ट्र किसी काम का नहीं : ह्युगो शावेज़**

संयुक्त राष्ट्र। अमरीका की तरफ से लगाए गये न्युकिलयाई खतरे के इल्जाम से नाराज़ ईरान के राष्ट्रपति डा० महमूद अहमदी नेजाद ने जवाबी हमले करते हुए दावा किया है कि दुनिया के लिए असल न्युकिलयाई खतरा तो अमरीका है जबकि ईरान का न्युकिलयाई प्रोग्राम पुरअमन मकासिद के लिए है। अहमदी नेजाद ने 118 मुल्कों की नावाबरस्ता तहरीक की सरबराह कान्फ्रेंस में इस्तेफ़सार किया कि लोगों को अमरीकी न्युकिलयाई खतरे के दबाव में क्यों रहना चाहिए और इस खतरे पर रद्दे अमल के लिए संयुक्त राष्ट्र की सेक्योरिटी काउंसिल क्या कर रही है? ईरानी राष्ट्रपति ने अपने हामियों से अपील की कि वह ईरान को पुरअमन मकासिद के लिए न्युकिलयाई फ़रोग से रोकने की कोशिश करने वाली ताकतों से मुकाबला करने में उनकी मदद करें। उन्होंने इस्तेफ़सार किया कि अपने ग़ुरुर व ताकत की बदौलत अमरीका और

बिर्टन सेक्योरिटी काउंसिल के अरकान कैसे बन सकते हैं और कैसे उन्हें वीटो पावर मिल सकता है? अहमदी नेजाद ने कहा कि अमरीका ने काउंसिल का इस्तेमाल अपनी पालीसियों को नाफ़िज़ करने के स्टेज के तौर पर किया है।

उधर वेनुजुएला के राष्ट्रपति ह्युगो शावेज़ ने यू०एन० जनरल असेम्बली से सम्बोधन में अमरीका के राष्ट्रपति जार्ज बुश को शैतान करार देते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र अब किसी काम का नहीं रह गया है। मिस्टर शावेज़ ने कहा कि अमरीकी साम्राज इन्सानियत को दावं पर लगा रहा है उनके हामी और क्यूबा के बाएँ बाजू के राष्ट्रपति फ़ीदल कास्त्रो ने भी राष्ट्रपति बुश को दुनिया का तानाशाह करार दिया है। उन्होंने कहा कि दुनिया की बड़ी ताकतों का सलामती काउंसिल पर दबदबा काएम है इसलिए संयुक्त राष्ट्र किसी काम का नहीं रह गया है।

काएदे मुअज़्ज़म के लिए लखनऊ और उत्तरप्रदेश के दूसरे ज़िलों में

तहिनियती जश्ने इस्तेक़बालिया

काएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी साहब की कौमी व मज़हबी ख़िदमतों को सराहने के लिए लखनऊ में शीशमहल, अकबरीगेट, हज़रतगंज, काज़मैन, कर्बल-ए-दयानतुद्दौला और हुसैनाबाद वग़ैरा में बड़े पैमाने पर तहिनियती जश्ने इस्तेक़बालिया 13 रजब की छुट्टी के सिलसिले में मनाए गये। जहाँ सुन्नी और शीआ हज़रात ने गुलपोशी की रस्म अदा करके जश्न मनाया वहीं काएदे मुअज़्ज़म की जदोज़ेहद और कामियाबी पर शीआ पर्सनल ला बोर्ड के मिम्बरों ने भी

गुलपोशी करते हुए 13 रजब के सिलसिले में काएद का शुक्रिया अदा किया।

शीशमहल और पटकापुर, कानपुर और मुज़फ़्फ़र नगर के तो मनाज़िर ही अजीब थे। हज़ारों के भीड़ में हर रास्ते और हर गली में लगातार फूलों की बारिश होती रही। पूरे-पूरे महल्ले काएद के स्वागत में सजा दिये गये थे। शीशमहल में तो जनाब आलिम साहब ने अपने प्रेस से काएदे मुअज़्ज़म की हज़ारों की तादाद में तस्वीरें भी तक़सीम कीं।

अवध हाट की तामीर की इजाज़त नहीं दी जाएगी: मौलाना डा० कल्बे सादिक़

लखनऊ। आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के उपाध्यक्ष डा० मौलाना कल्बे सादिक़ साहब और मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब ने हुसैनाबाद ट्रस्ट के घण्टाघर के सामने की ज़मीन पर अवध हाट या फिर किसी भी तरह की सरकारी तामीर की मुख़ालेफ़त करते हुए कहा कि अवध के नवाबों और बादशाहों ने हुसैनाबाद और उसके आस-पास औकाफ़ की ज़मीन को सैर-सपाटे और अवाम की तफ़रीह के लिए नहीं बल्कि कौम की फ़लाह व बहबूद के लिए वक्फ़ किया था। इन ज़मीनों का ग़ैरक़ानूनी तरीक़े से सरकारी दस्तावेज़ में इन्दराज करके उसका बेजा इस्तेमाल करने की जो भी कोशिश हो रही है उस पर किसी भी हाल में ख़ामोश नहीं बैठा जायगा और इसकी मुख़ालेफ़त होगी।

मौलाना डा० कल्बे सादिक़ ने कहा कि जब पिछली बी०जे०पी० हुकूमत के दौर में मज़क़ूरा ज़मीनों पर तामीर शुरु की गई थी तो जवाद मियाँ ने उसको रुकवा दिया था मैं उस वक़्त विदेश के दौरे पर था। कुछ सरकारी ज़राय से अभी हाल में ही यह मालूम हुआ कि मज़क़ूरा ज़मीन पर फिर से तामीर शुरु होने जा रही है जिसे किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जायगा।

मौलाना कल्बे जवाद ने इस ज़मीन पर खड़े होकर कहा कि इस ज़मीन पर किसी भी सूरत में अवध हाट बनाने नहीं दिया जायेगा और अगर हुकूमत ने इस मामले में ज़िद की तो कौम किसी भी हद से गुज़रने को तैयार होगी।